## : प्राक्कथन :

## प्राक्कथन

एम.फिल.परीक्षा के लिए विशेष साहित्य विधा के रूप में मैंने ` नाटक ` विषय चुना है। आधुनिक नाटककारोंमे उपेंद्रनाथ अश्क जी का विशेष स्थान है। ` अलग - अलग रास्ते ` समस्या प्रधान नाटक उपेन्द्रनाथ अश्क जी की ही देन है। उन्होंने इस नाटक में समस्या तो निर्माण की है, लेकिन उसको सुलझाने का मार्ग स्पष्ट रूप से नहीं दिया है। उसे केवल सूचित किया गया है। मैंने सामान्य दृष्टिकोणको सामने रखकर ही समस्याएँ चुनी हैं और उसका विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है।

प्रथम अध्याय में केवल उपेन्द्रनाथ अश्क की जीवनी तथा उनके साहित्य का परिचय दिया गया है। उनके नाटक, एकांकी, कहानियाँ, उपन्यास, काव्यग्रंथ, संस्मरण, निबन्ध, लेख, पत्र, डायरी और विचार ग्रन्थ तथा अनुवाद आदि साहित्य का नामनिर्देश एवं समय का उल्लेख किया है।

द्वितीय अध्याय में ` अलग अलग रास्ते ` नाटक की कथावस्तु दी है। वस्तुचयन का आधार क्या है ?, नाटकपर पाश्चात्य प्रभाव किस प्रकार पडा है तथा भारतीय परंपरा के अनुसार विवाह की कल्पना, विवाह का उद्देश्य, विवाह के प्रकार तथा ` अलग अलग रास्ते ` नाटक में समाविष्ट समस्याएँ आदिओं का विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय में भारतीय दृष्टिकोण से परिवार का स्वरूप, महाभारत में स्त्री धर्म, पारिवारिक कोटी के पुरूष पात्र, स्त्री-पुरूष सम्बन्ध मूल्य संक्रमण आदिओं का विवेचन है। साथ ही परिवारिक समस्याओंका विश्लेषण किया गया है।

..

चतुर्थ अध्याय में ` समाज ` शब्द की परिभाषा दी है । नाटक और सामाजिकता, नाटयरचना और सामाजिक प्रेरणा, नाटक के सम्बन्ध में भारतीयों का दृष्टिकोण, नाटक और सामाजिक स्थिति, नाटककार का सामाजिक दायित्व, सामाजिक मनोवृत्ति और नाटक, सामाजिक मानसशास्त्र सामाजिक भूमिका, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया आदिओं पर विचार प्रकट किया है । वैसे ही ` अलग अलग रास्ते ` नाटक में आयी सामाजिक समस्याओंका विश्लेषण किया गया है ।

पाँचवे अध्याय में उपसंहार के अंतर्गत अपना मत प्रकट करने का प्रयास किया है ।

-000-